वेदों में प्रशस्य कर्मभेद - १०

आधुनिक विज्ञान में प्रैसर देनेवाले कर्म को पाश्चात वैज्ञानिकों की देन समझा जा रहा है । किन्तु भारत के पुरातन साहित्य में मॉर्डन प्रशस्य कर्मो को यास्कनिघ. ३/८ में १० प्रैसर देनेवाले कर्मो के रूप में वर्गीकरण किया गया है ।

१. अम्रमा	२. अनैमा	३. अनैद्य (अनिन्द्य:)
४. अनवद्य:	५. अनमिशस्तय: (अनीमशस्ति:)	६. उक्थयं:
७. सुनीथ:	८. पाक:	९. वाम:
	१०. वयुनम्	

१. *अस्रेमा* उक्त प्रैशर कर्म में से अस्रेमा कर्म को विश्वामित्र ऋषि के अग्नि विज्ञान सिध्दांत में 'मर्त्यास' नामक मनुष्यों की विशेष-विशेष विद्या प्राप्त २५ किस्मों में से अक्षेमाणम नामक कर्म को नित्य अग्नियों को उत्पन्न करने में किया है । यहा पर व्याकरणाचार्यो को यह देखना है कि अष्टाध्यायी के सूत्र और महाभाष्यों की वार्तिको द्वारा इस कर्म को भिन्न-भिन्न ऋषियों ने किस-किस देवता (विषय) की विद्याओं में किस नियम से प्रयोग किया है । ऋ.१०/८/२ में अस्रेमा प्रैसर कर्म को त्रिशिरास्त्वाष्ट्र ऋषि सिध्दातों में अग्नि विज्ञान में विराट त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा मनुष्य आत्मा का बहुत ही गहन भेद द्वारा प्रकृति परमाणु के साथ मित्रावरुण रूपी नमी के साथ जल के साथ वर्ष कर बहुत बड़ा ज्ञान प्रदान कर रहा है ।

२. *अनेमा* पद को व्याकरणकी जटिलताओं में ढुंढ़ने के लिये अष्टाध्यायी के सूत्र और महाभाष्यों की वातिकों द्वारा देखने की कृपा करें कि यह प्रशस्य कर्म किस तरह से निकल कर वेद विद्याओं को जाग्रत करने में सहायक हो रहा है ।

३. *अनेद्य :-* ऋ.१/८१/४ में राहुगण पुत्रो गौतम ऋषि सिध्दांतो में मरुत विज्ञान के त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा प्रकाश किरणों द्वारा प्रजा रुपीही मेघ विद्या में प्रयोग किया गया है । पुन: इस कर्म का प्रयोग अगस्त ऋषि के इन्द्र देवता के विराट त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा ऋ.१/१६५/१२ में किया गया है । मित्रावरुण के सहयोग द्वारा मरुत का प्रयोग सिध्दांत दिया गया है । ऋ.५/६१/१३ में श्यावाश्व आत्रेय ऋषि के ममता विज्ञान में गायत्री छन्द भेद द्वारा पुन: प्रकाश विज्ञान की किरणों के अश्वों द्वारा इमका प्रयोग सिध्दांत दिया गया है । ऋ.६/१९/४ में भरद्वाजो ब्रार्हस्पत्य ऋषि के इन्द्र विज्ञान में निचृत्त्रिष्टुप भेद द्वारा पुन: इम कर्म का प्रयोग सिध्दांत दिया गया है ।

४. *सुनीथ :-* ऋ.१/३५/१:१० में सविता देवता के त्रिष्टुप तथा विराट त्रिष्टुपछन्द भेद द्वारा अङ्गिरसा हिरण्य स्तूप ऋषि सिध्दातों में अरबों वर्ष पूर्व का सिध्दांत दिया गया है कि परमाणुओं को किन किरणें और प्रकाशों द्वारा संसार को सत्र करना तथा अन्य लोकों के प्रयोग सिध्दांत विद्वानों

को दिये गये हैं। २० वा मंत्र यजु.३४/२४ से २१ वाले प्रसङ्ग से भी जुड़ा हुआ है। ऋ. १/६२/१३ में गौतमो नोधा ऋषि सिध्दांतो में इन्द्र देवता विज्ञान में आर्षी त्रिष्टुप छन्दभेद द्वारा इस कर्म का प्रकाश विज्ञान के साथ सिध्दांत दिया गया है।

ऋ.२/८/२ में गृत्समद ऋषि के अग्नि विज्ञान में गायत्री छन्द भेद द्वारा विमान विद्या में जल रुप अग्नियों के साथ इस कर्म विशेष के सिद्धांत उपलब्ध कराये गये है। ऋ ३/८/८ में विश्वमित्र ऋषि के विश्वेदेवा विज्ञान में निचृत्त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा आदित्य, भद्र, वभव के साथ सुनीथ कर्म समन्वय सिध्दांत उपलब्ध कराया गया है। ऋ. ५/६१/४ में यज आत्रेय ऋषि के मित्रावरुण विज्ञान में निचृद अनुष्टुप छन्द भेद द्वारा सुनीथ कर्म समन्वंय सिध्दांत दिया गया है। ऋ.५/९/२ में सत्यप्रवा आत्रेय ऋषि के उषा विज्ञान में भुरि.वृहती छन्द भेद द्वारा सुनीथ प्रशस्य कर्म सिध्दांत दिया गया है। सुनीथ प्रशस्य कर्म के लिये अन्य ऋषि देवता छन्दों द्वारा और भी अनेक वेदस्थल दिये गये है।

५. *उक्थम्* ऋ. १/५/८/ में मधुछन्दा ऋषि के इन्द्र (विद्युत विज्ञान में पादनिचृत गायत्री छन्द भेद द्वारा शतक्रतो विद्युत के असख्यों कर्मो में से वाणी के ५१ भेदों में गिर: नामकी वाणीके साथ उक्थम रुपी प्रशस्य कर्म के साथ प्रयोग करने का मनुष्यों को दिशा निर्देश दिया गया है। पुन: ऋ.१/८/१० में वर्धमाना गायत्री छन्द भेद द्वारा सब पदार्थों के अंश-अंश में रम रहे पदार्थो के साथ उक्थम कर्म सिध्दांत दिये गये है। ऋ १/१७/५ में शक्र नामक विद्युत के उक्त कर्म सिध्दांत दिये गये है। चारों वेदों में अनेक ऋषि देवता छन्द भेद द्वारा उक्थम प्रशस्य कर्म भेद सिध्दांत दिये गये है।

६. *अनवद्यो:* - ऋ.१/१/२ में वचोयुजा के रुप में मधुछन्दा ऋषि के रुप में किस कर्म का विद्युत विज्ञान के निचृद गायत्री छन्द भेद द्वारा क्या ज्ञान दिया जा रहा है। विद्वानों को ध्यान देना चाहिये। पुन: इस पद को काण्वो मेध्यतिथिके ऋमवी विज्ञान में विमान विद्या के साथ प्रयोग सिध्दांत गायत्री छन्द भेद द्वारा १/२०/२ में सिद्धांत उपलब्ध कराया गया है। ऋ १/६/८ में मधुछन्दा ऋषिके इन्द्र विज्ञान में निचृद गायत्री छन्द भेद द्वारा पदार्थ और किरणों द्वारा अनवद्य प्रशस्य कर्म सिध्दांत उपलब्ध कराया गया है। ऋ १/३१/९; आङ्गिरस हिरण्य स्तूप ऋषि के अग्नि विज्ञान के जगती छन्द भेद द्वारा प्रकाश विज्ञान में प्रशस्य कर्म सिध्दांत दिया गया है। इस सिध्दांत को भी अनेक ऋषियों के भिन्न-भिन्न विज्ञानों में भिन्न-भिन्न छन्दों द्वारा चारों वेदों में देखा जा सकता है।

७. *अनमिशस्ति:* - ऋ१/१५२/५ में दीर्घतमा ऋषि के मित्रावरुण विज्ञान में त्रिष्टुप छन्दभेद द्वारा किरणों के साथ सिध्दांत उपलब्ध कराया गया है। ऋ.४/३६/१; में प्रतिक्षत्र वासुदेव ऋषि के विज्ञान में स्वराट त्रिष्टुप भेद द्वारा तीन पहियों के वाहन विमान विद्या में प्रयोग सिध्दांत दिया गया है। इस कर्म के लिये वेदों में और भी सिध्दांत दिये गये हैं।

८. पाक :- ऋ.१/३१/१४ में आङ्गिरस हिरण्यस्तूप ऋषि के अग्नि विज्ञान में जगती छन्द भेद द्वारा अग्नि रेक्ण धनों को पाक प्रशस्य कर्म द्वारा प्राप्त कराने वाले सिध्दांत उपलब्ध कराये गये है । ऋ १/१२०/४ कक्षीवान ऋषि के अश्विनो विज्ञान में आर्ष्यनुष्टुप छन्द भेद द्वारा प्रश्नोत्तर रुप में समाधान । ऋ.२/२१/११ में कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा ऋषि के आदित्यो विज्ञान में विराट त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा वसव विज्ञान में पाक कर्म भेद सिध्दांत ।

९. वयुनम् :- ऋ.१/१२/१; में पराशर ऋषि सिध्दांतो में अग्नि विज्ञान में निचृत त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा सब सुखों को प्रप्ति कराने वाले अग्नि के साथ दूत: कर्मो में वयुनम नामक प्रैसर कर्म देनेवाले सिध्दांत दिये गये हैं । ऋ.१/९२/२; हमें राहुगणो पुत्रो गौतम ऋषि के उषा विज्ञान में निचृ जगती और निचृत्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा प्राप्त की उषा किरणों के साथ वयुनम् प्रशस्य कर्म सिध्दांत दिया गया है । ऋ.१/१६४/५ और २१ न के पदों में पाक प्रशस्य कर्म के लिये दीर्घतमा ऋषिके विश्वदेवा विज्ञान में निचृत त्रिष्टुप और त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा विद्युत के साथ सम्बन्ध जोड़ा हुआ है । ऋ १/५४/६ में सब ऋषि सिध्दांतो में इन्द्र (विद्युत) विज्ञान में विराट त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा नमी के साथ विद्युत किरणो द्वारा वयुनम विद्या का ज्ञान सिध्दांत दिया है ।

१०. वाम् :- ऋ. १/२/४ में मधुछन्दा ऋषि के इन्द्रवायु विज्ञान में उशन्ति नामक कान्ति कर्म के साथ वाम प्रशस्य कर्म का प्रयोग निचृद गायत्री छन्द भेद द्वारा किया गया है । ऋ.१/११/३ में मेध्यातिथि ऋषि के इन्द्रावरण विज्ञान में गायत्री छन्द में इन्द्र और वरुण विद्युत वायु के पिरवर्तित रुप ईम का प्रयोग सिध्दांत भी दिया गया है । ऋ.१/२२/३ और ४ में अश्विनों विज्ञान में विमान विद्या के साथ मधुर गुण युत्त पदार्थो के प्रयोग सिध्दांत दिये है । ऋ १/३०/१८ में शुन: शेप ऋषि के अश्विनों विज्ञान में विमान विद्या के साथ वाम प्रैसर कर्म सिध्दांत दिया गया है । ऋ. १/३४/१;५;१२ में आङ्गिरसो हिरण्य स्तूप ऋषि के अश्विनो विज्ञान में विराड जगती, जगती और निचृत्त त्रिष्टुप छन्द भेद द्वारा विमान विद्या में वाम प्रशस्य कर्म भेद प्रयोग सिध्दांत दिया हुआ है । इन प्रसस्य कर्मो को अनेक ऋषि, देवता छन्द भेदों द्वारा देश को अनेको विद्याओं की प्राप्ति होकर देश को विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढने से कोई नही रोक पायेगा । इन प्रेशर के १० भेदों के विषय में पाश्चात देश कहा तक आगे बढ़ चुके है । उनेक साथ समन्वय करते हुये देश में उपलब्ध अगाध पुरातन साहित्य का लाभ उठाकर संसार के देशों में जानकारी प्राप्त करनी चाहिये कि वह अन्तरिक्ष विज्ञान में कहा तक पहुँच चुके है । हमारे देश में तो अन्तरिक्ष विज्ञान के लिये १६ और ६ साधारण भेद किये गये हैं ।

– ले. छोलेबिहारी लाल गोयल